।। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।।

पुनरुत्थान कार्य अने विचार सन्देश

पुनरुत्थान ट्रस्ट के विचार एवं कार्य के प्रसार हेतु मासिक पत्रिका मूल्य रु. ३/-

प्रकाशन स्थल : पुनरुत्थान ट्रस्ट 'ज्ञानम्' ९ बी, आनन्दपार्क, बलियाकाका मार्ग, जूना ढोर बजार, कांकरिया, अहमदाबाद - ३८० ०२८

वर्ष : १४ • अंक : ८ • फाल्गुन, शक संवत् १९४४ • युगाब्द ५१२४ • मार्च २०२३

सप्रेम नमस्कार ।

सन २०२० में भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की । पूर्व अभ्यास के कारण अनेक लोग इसे एनईपी अर्थात् न्यू एजुकेशन पोलीसी अथवा नई शिक्षा नीति कहते हैं । अनेक लोग सुखद आशावाद के अंतर्गत नेशनल एजूकेशन पॉलिसी अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा नीति कहते हैं । अनेक लोगों के लिये नई शिक्षा नीति हो या राष्ट्रीय शिक्षा नीति, खास कोई अंतर नहीं पडता ।

नई शिक्षा नीति के स्थान पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति कहने से अंतर पडना ही चाहिये ऐसी आज शिक्षा की स्थिति है । ब्रिटीशों ने दो ढाई सौ वर्ष पूर्व भारत की शिक्षा का यूरोपीकरण किया । उसके दुष्प्रभावी आधिपत्य से मुक्त होने के लिये हमारे जिन महापुरुषों ने आंदोलन चलाये थे, प्रयोग किये थे उसका नामकरण राष्ट्रीय शिक्षा का आंदोलन ऐसा ही हुआ था । वे सब शिक्षा को राष्ट्रीय बनाना चाहते थे । स्वाधीन भारत में यह आंदोलन यशस्वी नहीं हुआ और शिक्षा राष्ट्रीय नहीं बनी । आज भी अराष्ट्रीय शिक्षा समस्या बनकर स्थापित ही है । इसे राष्ट्रीय बनाना ही चाहिये । इस दृष्टि से सन २०२० की एनईपी नेशनल एजूकेशन पॉलिसी - राष्ट्रीय शिक्षा नीति है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा आईकेएस अर्थात् इण्डियन नॉलेज सिस्टम अर्थात् भारतीय ज्ञान प्रणाली है । सिस्टम को प्रणाली कहना, व्यवस्था कहना या पद्धति कहना इस विषय में भी स्पष्टता नहीं है । वह होने की आवश्यकता है । परंतु इस शब्दावली के परे जाकर जो बात होती है वह है विषयवस्तु की और संकल्पना की । उदाहरण के लिये मनोविज्ञान विषय के लिये भारतीय मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र के लिये भारतीय शिक्षाशास्त्र आदि बोले जाने लगा है । परंतु विषयों के भारतीय स्वरूप का अध्ययन और अध्यापन करने की व्यवस्था सुनियोजित पद्धति से नहीं बढाई गई है ।

क्रियान्वयन की योजना और अर्थसंसाधन तथा मानवसंसाधन का प्रावधान भी हो रहा है, कार्यक्रम हो रहे हैं, पाठ्यक्रम बन रहे हैं, पुस्तकें भी बन रही हैं, जून २०२३ से लागू भी हो जायेंगी, पढाई भी जायेगी परंतु वास्तव में हो क्या रहा है इसका पता ही नहीं है । जिसे पता नहीं है वे तो सुखी हैं परंतु जिन्हे पता चल रहा है वे दुःखी हैं । उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि किया क्या जाय ।

उत्साह में आकर बेतहाशा वेद, गीता, रामायण, सुभाषित आदि पढाने की शुरुआत होती है तो बडी कक्षाओं में भारतीय वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, कवि आदि का परिचय तथा उनके शास्त्र पढाने की तैयारी होती है । परंतु वेदमंत्र, उपनिषद मंत्र, स्तोत्र, गीता, योग, संगीत पढा देने से न मानस भारतीय बनता है न व्यवहार न व्यवस्था भारतीय बनती है । भारतीयता का मर्म समझे बिना शिक्षा राष्ट्रीय नहीं बनती । दूसरी बात है युगानुकूलता की । किसी भी शास्त्र की प्रस्तुति यदि युगानुकूल नहीं हुई तो वह जिंदा शास्त्र नहीं माना जाता ।

अतः शिक्षा को राष्ट्रीय बनाने के लिये कुछ इस प्रकार कार्य करना चाहिये ।

(१) लगभग एक सौ विद्वानों की एक परिषद बनानी चाहिये । इन विद्वानों ने शास्त्रीय, व्यावहारिक और युगानुकूल आयामों के संदर्भों को लेकर क्रियान्वयन की योजना बनानी चाहिये ।

(२) इन विद्वानों ने सर्वप्रथम शोध, अनुसंधान और संदर्भ सामग्री के निर्माण पर कार्य करना चाहिये । इसकी एक विस्तृत योजना बनानी चाहिये ।

(३) इस आधार पर विभिन्न विषयों के और विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और गतिविधियाँ तैयार करनी चाहिये ।

(४) विद्वज्ञनों को समझना चाहिये कि केवल विद्यालयीन या महाविद्यालयीन शिक्षा के पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तकें बदलने से या उन्हें सही अर्थों में भी भारतीय बना देने से शिक्षा भारतीय नहीं हो जाती । शिक्षा को व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन के साथ जोडकर ही देखा जाना चाहिये और उस दृष्टि से व्यवस्थाओं को भी भारतीय बनाना चाहिये । ऐसा करने के लिये विद्वानों ने अपने आकलन और प्रस्तुति का दायरा बढाना चाहिये ।

यहाँ कुछ प्रामाणिक और गंभीर चिंतायें व्यक्त की गई हैं । इस ओर पाठकों का ध्यान जायेगा ऐसी अपेक्षा है ।

इति शुभम् ।

- सम्पादक

ग्राहक विक्रेता प्रतिमान

वस्तु लेने वाला हर व्यक्ति ग्राहक है, वस्तु देने वाला हर व्यक्ति विक्रेता है और पैसे के बदले में ही कोई भी वस्तु ली या दी जाती है ऐसा प्रतिमान कभी भी किसी समाज को समृद्ध नहीं बनाता । भावना, विचार, उपदेश, मार्गदर्शन, सहायता, सेवा, जीवनधारणा के लिये अनिवार्य प्रकृतिदत्त पदार्थ क्रय और विक्रय योग्य पदार्थ हैं ऐसी सोच कभी किसी समाज को समृद्ध नहीं बनाती । इस प्रतिमान और इस सोच पर आधारित व्यवहार, व्यवस्था और नीति समाजजीवन को सुरक्षित, संरक्षित और सुसंस्कृत नहीं बनाते । भारत के मनीषियों ने इस सत्य को समझा था और उसके अनुसार समाज की व्यवस्थायें बनाई थीं । परिणाम स्वरूप सहस्रकों तक भारतीय समाज समृद्धि और संस्कृति के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित रहा । आज भी हमारे अंतर्मन में ये बातें सुरक्षित हैं, हमारी सद्‌विवेक बुद्धि को ये ग्राह्य बनाती हैं परंतु बाह्य और ऊपरी व्यवस्थाओं का इससे ऊपरी व्यवस्थाओं को बदलने से भारतीय समाज का भी अंतसत्त्व पुनः प्रतिष्ठित हो जायेगा ।

बालक शिक्षा और बालिका शिक्षा

सामान्य रूप में शिक्षा की सारी चर्चा में कहीं पर भी स्त्री और पुरुष के लिए शिक्षा ऐसी चर्चा नहीं होती है । जितने भी विषय हैं वे समान रूप से दोनों के लिए हैं । उदाहरण के लिये व्यक्तित्व विकास, विकास का स्वरूप, ज्ञानार्जन प्रक्रिया आदि ऐसे विषय हैं जो स्त्री और पुरुष दोनों को समान रूप से लागू हैं । केवल बहुत ही कम संख्या में कुछ विषय ऐसे हैं जो स्त्रीसापेक्ष और पुरुषसापेक्ष होते हैं । उदाहरण के लिये विवाहसंस्कार की बात होती है तब अच्छे वर के लक्षण पुरुष को ध्यान में रखकर और अच्छी वधू के लक्षण स्त्री को ध्यान में रखकर बताए जाएँगे और वे भी कुछ मात्रा में समान होंगे और कुछ मात्रा में भिन्न । वेषभूषा की बात होगी तब दोनों के लिये अलग से ही सोचा जाएगा । जैसे की पुरुष ऊपर का वस्त्र नहीं पहनेगा तो बहुत आपत्ति नहीं होगी परंतु स्त्री नहीं पहनेगी तो होगी । स्त्री के लिये लज्जारक्षण का प्रश्न खड़ा हो जाएगा । ऐसे ही कुछ मुद्दे और उदाहरण छोड़ दें तो सर्वत्र दोनों के लिये समान रूप से ही विचार किया जाता है । फिर यह प्रश्न क्यों है ? दोनों के लिये किन बातों में स्वतंत्र विचार करना और किन बातों में समान रूप से इसका विवेक करने की ही केवल बात है ।

पूर्वाग्रहों के भी कई कारण हैं । पूर्वाग्रह के कारण मनोवैज्ञानिक होते हैं इसलिये उनका उपाय भी मनोवैज्ञानिक पद्धति से ही करना चाहिए । कुछ कारण तो अनुचित नीतियाँ और अनुचित व्यवहार में भी होते हैं । स्त्री और पुरुष का प्रश्न ऐसा ही परिस्थितिजन्य तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से उलझ गया है जिसे आग्रहपूर्वक सुलझाने की आवश्यकता है । इस विषय के कुछ आयाम इस प्रकार हो सकते हैं ...

१. **स्त्रीधारा और पुरुषधारा :** परमात्मा जब इस सृष्टि के सर्जन में लगा तब वह स्त्रीधारा और पुरुषधारा ऐसी दो धाराओं में विभाजित हुआ । इन दो धाराओं को चेतन और जड़, पुरुष और प्रकृति ऐसा भी कहते हैं । यह पुरुष संज्ञा देहधारी स्त्री और पुरुष में जो पुरुष है वह नहीं है । पुरुष और प्रकृति ये तत्त्व हैं । इन दो में कोई अधिक नहीं कोई कम नहीं, कोई श्रेष्ठ नहीं कोई कनिष्ठ नहीं । दोनों समान हैं, दोनों मिलकर द्वंद्व बनता है और दोनों के मिलने पर ही कोई भी सर्जन हो सकता है । सृष्टि रचना के प्रारंभ में चेतन और जड की गाँठ बंध जाती है जिसे चिज्जड ग्रंथि कहते हैं । इस ग्रंथि के बंधने के बाद ही सृष्टि का सर्जन होता है । जब तक यह सृष्टि है ये दोनों एकदूसरे में ओत्प्रात् होकर रहते ही हैं । सृष्टि जब अपने मूल रूप में विलीन होने लगती है तब शेष सारे पदार्थ अपने कारण में विलीन होते होते अन्त में चेतन और जड की गाँठ खुलती है । तब सृष्टि का लय हुआ ऐसा कहते हैं । इसे ही प्रलय भी कहते हैं । फिर दूसरी बार सृष्टि का सृजन होता है जिसकी शुरुआत चिज्जड ग्रंथि के बंधने से ही होती है । सृष्टि के सारे पदार्थों में ये दोनों तत्त्व होते ही हैं । एक भी पदार्थ में दो में से एक का भी अभाव नहीं । मनुष्य देहधारी स्त्री और पुरुष इस स्त्रीधारा और पुरुषधारा के ही प्रतिनिधि हैं । दोनों समान हैं, दोनों अनिवार्य हैं, दोनों एकदूसरे के पूरक हैं, दोनों एकदूसरे के बिना अपूर्ण हैं, दोनों मिलकर ही एक पूर्ण होते हैं और पूर्ण होते हैं तब दोनों एक होते हैं, दो में से एक दूसरे में विलीन हुआ ऐसा नहीं है, दोनों एक हुए हैं ऐसा ही इसका अर्थ है । तात्पर्य यह है की भारत के तत्त्वचिन्तन में स्त्री और पुरुष को समान माना गया है, कहीं भी श्रेष्ठता और कनिष्ठता का भेद नहीं है । इस बात का व्यवहारचिन्तन में हमेशा स्मरण रखना आवश्यक है ।

स्त्री में आत्मा नहीं होती

२. अन्य अनेक अनिष्ट और गलत धारणाओं के साथ स्त्रीविषयक समस्या भी यूरोप से भारत में आई है । उन्नीसवीं शताब्दी तक यूरोप में ऐसा माना जाता था कि स्त्री में आत्मा ही नहीं होती । वह पुरुष के उपभोग हेतु बना हुआ पदार्थ है । उसे लोकतंत्र में मत देने का अधिकार भी नहीं था । उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में सुधार का दौर चला और स्त्रियों की मुक्ति, स्त्रीपुरुष समानता, स्त्रीस्वातंत्र्य, स्त्रियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास आदि विषय लेकर आन्दोलन शुरू हुए ।। ब्रिटिश राज के चलते भारत में भी ये आन्दोलन आये । भारत में भी ब्रिटीशों ने जो देखा उससे उनको भारत की स्त्रियों का शोषण हो रहा है ऐसा ही चित्र दिखा । कौनसी बातों के आधार पर ब्रिटीशों की ये धारणायें बनीं यह जानना मजेदार रहे गा । उन्होंने देखा कि भारत में स्त्रियाँ पढ़ने हेतु विद्यालय में नहीं जा रही हैं । वे दिनभर घर के कामों में ही व्यस्त रहती हैं, चौकाचूल्हा ही करती रहती हैं । वे घर के लोगों को खाना खिलाती हैं, स्वयं अन्त में भोजन करती हैं, बचता है वह खाती है, रात का बचा भी वही खाती है । उसे बाहर जाकर अपना कर्तृत्व दिखाने का, प्रतिष्ठित होने का अवसर ही नहीं मिलता है । उसे कमाने नहीं दिया जाता है इसलिए आर्थिक दृष्टि से वह हमेशा पुरुष के अधीन रहती है । कानून भी उसकी गुलामी के लिए पोषक हैं । पिता की संपत्ति में पुत्री को हिस्सा नहीं मिलता, जायदाद सब पुरुष के नाम पर होती है । भारत की मनुस्मृति भी कहती है कि स्त्री को स्वतन्त्रता का अधिकार नहीं है । कई जातियों में पुत्री को जन्मते ही मार दिया जाता है । स्त्री यदि विधवा हो जाय तो उसे पुनर्विवाह की छुट नहीं है परंतु पुरुष यदि विधुर होता है तो

उसे है । यह तो शोषण की पराकाष्ठा है । इतना शोषण तो यूरोप में भी नहीं होता है । अत: भारत की स्त्रियों की मुक्ति के लिए प्रयास करने ही चाहिए । परंतु भारत की समाजव्यवस्था, गृहव्यवस्था, शिक्षा, परम्परा आदि का ज्ञान ब्रिटीशों को था ही नहीं । दिखाई देने वाले चित्र का अर्थ लगाने की समझ उनके पास नहीं होना भी स्वाभाविक था । भारत की जीवनदृष्टि और यूरोप की जीवनदृष्टि में जो अन्तर था उसके कारण से चीजें उन्हें विपरीत ही दिखाई दें उसमें कोई आश्चर्य ही नहीं । दुर्भाग्य तो यह था कि भारत के अँग्रेजी शिक्षाप्राप्त उच्चभ्रु वर्ग के लोग भी ब्रिटीशों के प्रभाव में आ गए और इन बातों से लज्जित होने लगे । उन्होंने ब्रिटीशों के स्त्रीमुक्ति के प्रयासों में न केवल सहायता की अपितु बढ़चढ़ कर भाग भी लिया । विवाहविषयक, विवाह की आयु विषयक कानून बने, शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया और अनेक सामाजिक परम्पराओं पर पिछड़ेपन का और अंधाश्रद्धा का ठप्पा लग गया । तबसे लेकर आज तक यह प्रक्रिया चल रही है ।

गृहव्यवस्था में भारी परिवर्तन

३. विगत दोसौ वर्षों का भारतीय समाज का चित्र भी अस्तव्यस्त रहा है । शिक्षा और संस्कृति की परम्परा खंडित हो जाने के कारण से गृहव्यवस्था में भारी परिवर्तन हो रहे थे । स्त्रियों की स्थिति और पुरुषों की मानसिकता बिगड़ने लगी थी । अब वास्तव में स्त्रियों की स्थिति परतंत्र और दयनीय होने लगी थी । ‘तुम्हें कुछ नहीं समझता’ ऐसा सुनना पड़ता था । पहले घर में ही जो शिक्षा होती थी वह अब बन्द हो गई । घर के बाहर की दुनिया शीघ्रता से बदल रही थी । कारीगरों के व्यवसाय टूटते टूटते समाप्त हो रहे थे । पारिवारिक व्यवसाय नहीं होने के कारण स्त्रियों की आर्थिक सहभागिता समाप्त होने लगी । नौकरी का प्रचलन भी बढ़ने लगा । नौकरी व्यक्तिगत होती थी, पारिवारिक नहीं । स्त्रियों को उनकी विपरीत स्थिति के बारे में उकसाया जाना साथ साथ चल रहा था । सहअस्तित्व के सिद्धांत पर चल रहे समाज के स्थान पर एक वर्ग का हित दूसरे वर्ग का विरोधी ऐसी स्पर्धा आधारित मानसिकता बढ़ने लगी । आज तो यह स्पर्धा का युग है ऐसा स्वाभाविकता से कहा जाता है । इसके परिणामस्वरूप स्त्रीपुरुष के सम्बन्ध बदल गये और नए से व्याख्यायित होने लगे ।

४. आज हम इस बदली हुई स्थिति में जी रहे हैं । शिक्षितों का बहुत बड़ा वर्ग है जिसने इस स्थिति का स्वीकार कर लिया है । स्त्री अब स्वतंत्र व्यक्ति है । उसे पढ़ने की, अर्थार्जन करने की उतनी ही स्वतन्त्रता है जितनी पुरुष को । विवाह के विषय में भी उतनी ही स्वतन्त्रता है । अब विधवाविवाह, विवाहविच्छेद, अविवाहित रहना, बिना विवाह के स्त्रीपुरुषों का साथ रहना आपत्तिजनक नहीं रहा ।

घर को देखनेवाला कोई नहीं

५. इसका परिणाम गृहसंस्था पर बहुत विपरीत स्वरूप का हुआ है । पारंपरिक व्यवस्था में घर चलाना स्त्री का काम माना जाता था । अब स्त्री का वह दायित्व नहीं रहा । अब वह वे सभी काम करने के लिए स्वतंत्र है जो पारंपरिक रूप से पुरुषों के माने जाते रहे हैं । वह अब पुरुषों को दिखा देने की मानसिकता में है की वह क्या क्या कर सकती है । उसने सिद्ध भी कर दिया है की वह वे सब काम कर सकती है जो पुरुष करता है, और बेहतर तरीके से भी कर सकती है । परंतु घर को देखने वाला कोई नहीं रहा । घर स्त्री और पुरुष दोनों के लिये हेय है । उसकी ओर देखने वाली न स्त्री है न पुरुष है । घर संस्कृति और संस्कार का केंद्र है । विद्यालय से भी अधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा घर में मिलती है । नई पीढ़ी निर्माण करने का मुख्य काम घर का है । अब इस काम की ओर देखने वाला भी कोई नहीं रहा । घर के बाहर होने वाला अर्थार्जन दोनों के लिये मुख्य काम हो गया । सारी प्रतिष्ठा, सारी सार्थकता उसी एक काम में रह गई है । सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों की भी स्थिति ऐसी ही हो गई है । घर के अस्तव्यस्त हो जाने के कारण से समाज का सांस्कृतिक आधार ही नष्ट हो गया है । इसे ही आधुनिकता कहा जा रहा है ।

स्त्री को पुरुष की बराबरी करनी है

६. धीरे धीरे चिन्ता तो बढ़ रही है परन्तु समानता, स्वतन्त्रता,करियर आदि के विषय में पुनर्विचार करने की आवश्यकता अभी तो नहीं दीख रही है, भले ही दूर क्षितिज में उसके आसार दृष्टिगोचर होते हों ।

७. एक दृष्टि से कहें तो स्त्री के लिये जो समस्या दोसौ वर्षों में अनुभव में आ रही है वह समाप्त नहीं हुई है, केवल उसका रूप परिवर्तन हुआ है । स्त्री स्वतंत्र अवश्य हुई है परन्तु समान नहीं हुई । उसे वही काम करने की चाह है और वही काम करने में प्रतिष्ठा प्राप्त है जो पुरुषों के हैं । उसे पुरुष की बराबरी करना है । इसका अर्थ यह हुआ कि श्रेष्ठ तो पुरुष ही है और स्त्री को भी श्रेष्ठ होना है तो वे सारे काम करने होंगे जो पुरुष करता है । स्त्री भी ऐसा ही समझती है । पुरुष स्त्री के काम नहीं करेगा । हेय काम नहीं, स्त्री है इसलिए स्त्री जो काम करती आई है वे काम पुरुष नहीं करेगा और पुरुष की बराबरी करने की धुन में स्त्री भी नहीं करेगी । इसमें काम अच्छे हैं कि नहीं यह प्रश्न ही नहीं है । स्त्री हेय है इसलिए स्त्री के काम भी हेय हैं । पुरुष श्रेष्ठ है इसलिए पुरुष के काम भी श्रेष्ठ हैं । स्त्री के विषय में जो हीनता का भाव है वह अब इस रूप में प्रकट होता है कि उसे अब ऐसे कोई काम करने का निषेध न हो जो पुरुष के हैं । यही बात वेषभूषा में भी दिखती है । स्त्री पुरुष का वेश पहनती है परन्तु पुरुष कभी स्त्री का वेश नहीं पहनता । पुरुष स्त्री का वेश पहने वह स्त्री को भी पसन्द नहीं । वेषभूषा, खानपान, मनोरंजन, बोलचाल आदि

सबकुछ दोनों पुरुषों का ही करते हैं । लोग अब पुत्र ही चाहिए ऐसा नहीं कहते । हमारे लिये पुत्र और पुत्री समान हैं ऐसा कहते हैं परन्तु पुत्री को पुत्र ही बनाते हैं । अर्थात आज जैसा स्त्रीत्व को नकारा जा रहा है ऐसा तो अठारहवीं शताब्दी में भी नहीं हो रहा था । यह सांस्कृतिक संकट का मूल है । आज बालक और बालिका शिक्षा का जो विचार करना है उसकी पार्श्वभूमि यह है ।

शिक्षाविचार

- यह स्त्रीशिक्षा और पुरुषशिक्षा का ही प्रश्न नहीं है, समाज और संस्कृति हेतु शिक्षा का विचार करना है ।
- शिक्षा का प्रथम बिन्दु यह होना चाहिए कि स्त्री और पुरुष दोनों के मन से यह जो स्त्री की हीनता का भाव है यह निकाले । स्त्री को स्त्री होना है और पुरुष को पुरुष । स्त्री को भी पुरुष नहीं बनना है । समाज को और विश्व को स्त्री और पुरुष दोनों की आवश्यकता है, अकेले पुरुष की नहीं ।
- स्त्री को स्त्री और पुरुष को पुरुष बनना बौद्धिक स्तर का विषय नहीं है, मानसिक अर्थात भावात्मक और शारीरिक स्तर का है । बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर पर दोनों समान ही हैं । व्यावहारिक धरातल पर भी दोनों समान हैं ।
- समानता दिखाने के लिये वेश, वाणी, रूप, काम, कौशल आदि में परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं । इन सभी बातों में अन्तर होने पर भी उसे भेदभाव का निमित्त नहीं बनाना चाहिए । विचार करने का दृष्टिकोण बदलना चाहिये । हमें यह सोचना चाहिए कि अच्छे या बुरे कामों का निकष वे काम स्त्री करती है कि पुरुष यह नहीं है, प्राप्त परिस्थिति में वह करणीय है कि नहीं यही उसका निकष है । उदाहरण के लिये स्त्री और पुरुषनिरपेक्ष होकर यदि देखें तो कृषि, शिशुसंगोपन, भोजन बनाना और खिलाना, जूते बनाना, दफ्तर में बाबूगिरी करना, राज्य चलाना ऐसे भिन्न भिन्न कामों में उत्तम और वरीयता से करने वाले काम कौनसे हैं ऐसा विचार करने पर ध्यान में आएगा कि शिशु संगोपन और भोजन बनाने का काम बाबूगिरी करने से तो अच्छा ही है और कदाचित राज्य चलाने से भी अच्छा है क्योंकि संगोपन और भोजन से राज्य चलाने वाले लोग बनते हैं, राज्य चलाने से नई पीढ़ी के संस्कार नहीं होते । इस प्रकार सभी प्रकार के कामों को सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में तौलकर कौन ये काम कर सकता है इसका विचार कर स्त्री और पुरुष में कार्यविभाजन करना चाहिए ।

शिक्षा का महत्त्वपूर्ण मुद्दा शील रक्षा

- स्त्री और पुरुष दोनों को शीलरक्षा का महत्त्व सिखाना यह शिक्षाका महत्त्वपूर्ण मुद्दा है । आज माना ऐसा जाता है कि स्त्री को ही पुरुष से खतरा है, शीलहरण स्त्री का ही हो सकता है । पुरुष का शीलहरण होता ही नहीं और स्त्री कभी शीलहरण करती ही नहीं । यह सत्य नहीं है । शील दोनों का होता है, दोनों एकदूसरे का शील हरण कर सकते हैं और आज दोनों का शील खतरे में है यह वस्तुस्थिति है । इस दृष्टि से छः या सात वर्ष की आयु से ही शिक्षा का प्रारम्भ होना चाहिए । इस दृष्टि से सहशिक्षा उचित नहीं है । बालक बालिका की मित्रता यह अवास्तविक संकल्पना है । परन्तु आज ऐसी बात सुनने को कोई तैयार नहीं होता है और बोलने वाले की ही बोलती बंद कर दी जाती है । यह सांस्कृतिक दृष्टि से आत्मघात है । वास्तव में गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने तक अलग रहकर मानसिक क्षमताओं का विकास कर गृहस्थाश्रम में परस्पर के रक्षण, संरक्षण और सहयोग से पराये स्त्रीपुरुषों के साथ भी स्वस्थ सम्बन्ध बनाने की शिक्षा हर बालक और बालिका को प्राप्त होनी चाहिए । तभी बौद्धिक स्तर पर शास्त्रार्थ हो सकता है । अच्छा गृहस्थाश्रम दोनों के लिये अपेक्षित है । अच्छा गृहस्थाश्रम समाज के लिये भी श्रेयस्कर है । संस्कारपरम्परा निभाने के लिये संस्कृति को भी उसकी आवश्यकता है । घर को घर बनाने की दृष्टि से बालक और बालिका दोनों की मनोवैज्ञानिक शिक्षा आवश्यक है । मानस यदि ठीक हो जाता है और बातें अपने आप ठीक हो जाती हैं ।
- घर सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण केन्द्र है । घर गृहिणीकेन्द्री होता है । पुरुष गृहस्थ अर्थात घर में रहने वाला कहा जाता है । गृहिणी के बिना घर घर नहीं होता । इस दृष्टि से स्त्री में घर चलाने और पुरुष में घर में रहने की पात्रता निर्माण हो ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए । साथ ही दोनों मिलकर घर को अच्छा शिक्षाकेन्द्र बना सकें ऐसी शिक्षा भी मिलनी चाहिए । प्रत्येक बालिका को बड़ी होकर बौद्धिक क्षेत्र में कोई भी काम करे तो भी अच्छी स्त्री, अच्छी पत्नी, अच्छी गृहिणी और अच्छी माता बनना है और प्रत्येक बालक को बड़ा होकर अच्छा पुरुष, अच्छा पति, अच्छा गृहस्थ और अच्छा पिता बनना है यह मातापिता को और शिक्षक को ध्यान में रखना चाहिए । इसके अनुकूल बौद्धिक क्षेत्र की शिक्षा की भी योजना करनी चाहिए ।
- स्थिति यह है कि आज पुरुषसापेक्ष शिक्षा क्षेत्र का ही विचार किया जा रहा है और स्त्री को इसमें सब अवसर उपलब्ध कराने को बालिका शिक्षा का आदर्श माना जाता है । कहीं स्वतंत्र रूप से बालिका शिक्षा का विचार करते समय खाना बनाना, शिशु संगोपन करना, रंगोली, कढ़ाई, बुनाई, साजसज्जा आदि कार्यकलापों का विचार किया जाता है । ये दोनों आत्यंतिक विचार हैं और दोनों त्याज्य हैं । केवल बालिका शिक्षा का या केवल बालक की शिक्षा का नहीं अपितु सामाजिक परिप्रेक्ष में दोनों की शिक्षा का विचार करने की आवश्यकता है ।

इस प्रकार यहाँ छोटी छोटी बातों का विचार न करते हुए प्रश्न के मूल मुद्दों का ही विचार किया है । एक बार प्रस्थान ठीक हो गया तो शेष बातें ठीक होने में विलम्ब नहीं होगा ।

पुनरुत्थान विद्यापीठ द्वारा आयोजित
एक साथ १०५१ ग्रंथों का लोकार्पण समारोह

पुनरुत्थान विद्यापीठ
सा विद्या या विमुक्तये

निमंत्रण

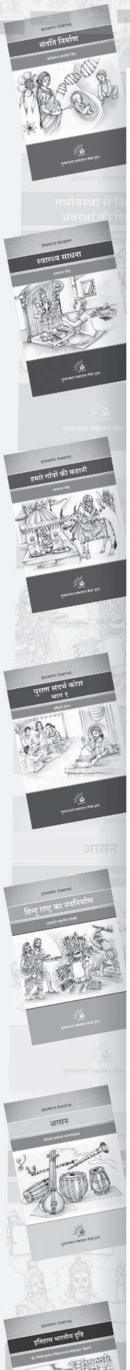

आदरणीय श्री ______________________

सप्रेम नमस्कार।

पुनरुत्थान विद्यापीठ विगत अठारह वर्षो से शिक्षा का शत प्रतिशत भारतीय प्रतिमान प्रस्थापित हो इस हेतु कार्य कर रहा है। इस अठारह वर्ष के कार्यकाल में विद्यापीठ ने अध्ययन,अनुसंधान,पाठ्यक्रम निर्माण, संदर्भ सामग्री निर्माण तथा शिक्षकों और अभिभावकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

पुनरुत्थान विद्यापीठ एक ऐसी शिक्षा संस्था है जो भारतीय संस्कृति के आधार पर शिक्षा की पुनर्रचना करना चाहती है। पुनरुत्थान विद्यापीठ चाहता है कि भारतीय शिक्षा की प्रतिष्ठा विद्वतजनों और सामान्यजनों की कृति,वाणी,मन,बुद्धि और ह्रदय में हो इस हेतु विद्यापीठ ने १६ जुलाई २०१९ व्यासपूर्णिमा के दिन एक बड़ा प्रकल्प लिया जिसका नाम है **"ज्ञानसागर महाप्रकल्प"** एक साथ **१०५१** ग्रंथों के निर्माण एवं प्रकाशन का यह प्रकल्प है। यह प्रकल्प अब पूर्णता की ओर है। अब इसका लोकार्पण होने जा रहा है। इस कार्यक्रम की जानकारी इस प्रकार है।

तिथि एवं दिनांक : चैत्र/वैशाख कृष्ण दशमी, युगाब्द ५१२५, दिनांक १५ अप्रैल २०२३
स्थान : सेनेट हॉल, गुजरात यूनिवर्सिटी, कर्णावती (अहमदाबाद)
समय : पूर्वाह्न १०.०० से १२:३०

जूनापीठाधीश्वर महामंडलेश्वर अनंतश्रीविभूषित परिव्राजकाचार्य श्री अवधेशानंदगिरि महाराज कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे।

ग्रंथों का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक माननीय मोहनजी भागवत के कर कमलों से होगा।

राष्ट्र सेविका समिति की वंदनीय प्रमुख संचालिका माननीय शांताक्का विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित रहेगी।

आप इस कार्यक्रम में अवश्य उपस्थित रहें। आपको इस कार्यक्रम में उपस्थित रहने का ह्रदय पूर्वक निमंत्रण है।

विनीत

विपुल रावल	कार्यसमिति सदस्य	इन्दुमति काटदरे
कार्यवाह, ज्ञानसागर महाप्रकल्प		अध्यक्ष, ज्ञानसागर महाप्रकल्प
संयोजक, पुनरुत्थान विद्यापीठ		कुलपति, पुनरुत्थान विद्यापीठ

विशेष :
१ प्रकाशित ग्रंथों की प्रदर्शनी रहेगी। आदेश पत्र देकर ग्रंथो को क्रय भी कर पाएंगे।
२ इस अवसर पर २० प्रतिशत वर्तन रहेगा। क्रय किए ग्रंथ आपको डाक अथवा कुरियर से भेजे जाएंगे। भेजने का व्यय विद्यापीठ करेगा।
३ आपके आने की सूचना ३१ मार्च २०२३ तक देना है। आप के साथ कोई आ रहा है तो उनकी सूचना भी देना है।
४ सूचना में नाम, स्थान, भ्रमणभाष क्रमांक अवश्य भेजे।
५ कार्यक्रम के बाद भोजन की व्यवस्था रहेगी।
६ आपकी आने की सूचना ८१६००२६९०० क्रमांक पर व्हाट्सअप पर दें।

नागालेंड की लोक-कथाएं

पवित्र आत्मा

एक ग्राम में माता-पिता अपने सात पुत्रों के साथ रहते आ रहे थे। दुर्भाग्यवश पुत्रों के माता-पिता की मृत्यु एक साथ हो गयी। सातों पुत्र उदास हो गए। एक दिन बड़े भाई ने अपने भाइयों से बोला - भाई, इस प्रकार अब उदास बैठने से क्या होगा। हमें अब कुछ काम करना चाहिए सभी भाईयों ने अपने बड़े भाई की बात मानी और काम करने के लिए तैयार हो गए। सातों ने कठोर परिश्रम करते हुए, जंगल की सफाई की, फिर उस स्थान पर अनाज लगाया। पर अनाज के खेत को जंगल से हिरण आकर खेत को नष्ट कर देता था। भाइयों ने अनेक बार खेतों में अनाज लगाया। परंतु, बार-बार हिरण खेतों को बुरी तरह नष्ट कर देता था। भाइयों को गुस्सा आया। सभी ने निर्णय लिया कि जंगल में हिरण को खोजकर मारना होगा। सातों भाई हिरण को पकड़ने के लिए जंगल की ओर चल पड़े। घने जंगल में हिरण दिखाई दिया। उसे जैसे ही भाइयों ने मारना चाहा, हिरण गायब हो जाती। हिरण को मार नहीं पा रहे थे। ऐसा करते हुए, रात हो गयी। भाइयों ने देखा सामने एक घर बना हुआ है। वह झूम खेती का घर था। सभी भाई उस घर के पास पहुँच गए। उन्हें तीव्र भूख भी लगी थी। वे थक भी चुके थे। वे सभी झूम घर में सो गए। अचानक उन्हें गाने की आवाज सुनाई दी। सातों भाईयों की नींद खुल गई। मधुर गाने की आवाज धीरे-धीरे झूम घर की ओर आती सुनाई दी। सभी भाइयों ने देखा कुछ लड़कियाँ गीत गाते हुए, सामने से उनकी ओर आ रही थी। वे सात लड़कियाँ थी।

निकट आने पर बड़े भाई ने उनसे पूछा - आप लोग कौन हैं? इस घने जंगल में गीत गाकर क्या कर रही है?

उनमें से एक ने उत्तर दिया। हम सभी रास्ते भटक गए हैं। रात हो गयी है। दूर से यह घर दिखाई दिया। सो, यहाँ पर हम सभी आ गयी। रात यहीं बिताकर कल सुबह अपने स्थान को चली जाएँगी।

एक भाई ने पूछा - परंतु आप सभी हैं कौन?

लड़कियों ने उत्तर दिया - हम सभी पवित्र आत्मायें हैं।

इस प्रकार सातों भाइयों को सातों पवित्र आत्मा रूपी लड़कियों से दोस्ती हो गयी। प्रातःकाल सभी पवित्र आत्मायें जाने लगी। उस सबमें सबसे छोटा भाई छोटी लड़की को देख रहा था। छोटी लड़की छोटे भाई को वहाँ से दूर ले गयी।

उसने छोटे भाई से कहा - देखो, मैं एक पवित्र आत्मा हूँ। मैं तुमसे हमेशा के लिए दोस्ती नहीं कर सकती हूँ। हाँ, एक बात बताती हूँ। जब तुम लोग अपने घर की ओर जाने लगोगे, तो आकाश से एक बड़ा जाल आकर तुम लोगों को लपेट लेगा। मैं तुमको एक चाकू दे रही हूँ। यह ईश्वर का दिया गया चाकू है। जाल को काटने में मदद मिलेगा। यह एक ईश्वरीय शंख है। जब तुम मुझे याद कर शंख को बजाओगे, तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी। ईश्वर ने चाहा, तो फिर से मिलेंगे ।

सभी पवित्र आत्माएं लुप्त हो गयी, पर उनके द्वारा गाये जा रहे गीत की आवाज सुनाई दे रही थी।

सातों भाई झूम घर से बाहर आए। अपने घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गए होंगे कि अचानक आकाश से एक बड़ा जाल उनके ऊपर गिरा और सातों को जाल में लपेट लिया।

छोटे भाई ने सभी भाइयों को बोला - आप सभी डरो नहीं। मेरे पास एक चाकू है। मैं अभी जाल को काट देता हूँ। छोटे भाई ने जाल को चाकू से काट दिया। सातों भाईने अपने घर पहुँचकर आराम की साँस ली।

दूसरे दिन सातों भाई अपने खेत में पहुँचे, फिर से उन्होंने परिश्रम करने का मन बना लिया था। बड़े भाई ने घर की सुरक्षा के लिए छोटे भाई को घर वापस भेज दिया। छोटे भाईने घर पहुँचकर छोटी पवित्र आत्मा लड़की को याद कर शंख बजाया। वह लड़की छोटे भाई के सामने खड़ी दिखी, फिर दिन भर दोनों एक साथ रहे। संध्या को वह लड़की लुप्त हो गयी। इस प्रकार प्रत्येक दिन छोटा भाई शंख बजाता, पवित्र आत्मा वाली छोटी लड़की आ जाती और दोनों दिनभर एक साथ रहते। एक दिन ग्राम की एक बूढ़ी महिला ने यह बात बड़े भाई को बताया। दूसरे दिन बड़े भाई के साथ सभी भाई छुपकर बैठ गये। छोटे भाई को पता नहीं चला कि अन्य भाई छुपकर बैठे हैं। छोटे भाई ने शंख बजाया। वह पवित्र आत्मा वाली लड़की आ गयी। दोनों खेलने लगे। खेलते-खेलते लड़की ने छुपे हुए, छः भाइयों के उपर अचानक पानी डाल दिया। वे सभी पत्थर के खंभे बन गये, फिर पवित्र आत्मा वाली लड़की लुप्त हो गयी। छोटे भाई को बहुत ही दुःख हुआ। अब शंख बजाने से वह लड़की नहीं आ रही थी। उसने आना बंद कर दिया था।

एक दिन छोटे भाई ने शंख बजाया, तो सामने एक व्यक्ति को देखा। उसके हाथ में एक बड़ा हथोड़ा था।

उसने छोटे भाई को कहा - यह हथोड़ा बड़ा अद्भुत है। इसे जो आदेश दोगे वह करेगा। तुम शंख मुझे दे दो, मैं यह हथोड़ा तुम्हें दे दूँगा।

छोटे भाई ने विचार किया। इस हथोड़े से अपने सभी भाईयों को पत्थर के खंभे को, तोड़कर मुक्त किया जा सकता है। उसने उस व्यक्ति को शंख देकर हथोड़ा अपने पास ले लिया। छोटा भाई चतुर था। उसने

हथोड़े को आदेश दिया – हथोड़े, अभी जाकर उस आदमी को मारो। उसके पास मेरा शंख है।

हथोड़ा ने आदेश का पालन किया। हथोड़ा ने उस व्यक्ति पर ऐसा प्रहार किया कि वह वहीं मर गया। छोटे भाई ने अपना शंख और उसका हथोड़ा दोनों प्राप्त कर लिया।

छोटा भाई बड़ा उदास रहने लगा था। उसने लड़की को बुलाने के लिए प्रेम से शंख बजाया। पर वह लड़की तो नहीं आई। हाँ, एक व्यक्ति जरूर आया। उस व्यक्ति के हाथ में एक बडी रस्सी थी।

उस व्यक्ति ने कहा – यह चमत्कारी रस्सी है। तुम इसे जो आदेश करोगे, वो काम यह रस्सी करेगी। तुम अपना शंख देकर यह रस्सी मुझसे ले सकते हो

छोटे भाई ने शंख देकर रस्सी प्राप्त कर ली । वह व्यक्ति जब जाने लगा, तो छोटे भाई ने रस्सी से कहा – 'उस आदमी को तुम लपेट लो।'

ऐसा कहना था कि रस्सी ने उस व्यक्ति को लपेट लिया।

छोटे भाई ने हथोड़ा को आदेश दिया – उस आदमी को मारकर मेरा शंख ले आओ।

हथोड़ा ने अपना काम कर शंख छोटे भाई को दिया।

एक दिन फिर से छोटे भाई ने शंख बजाया, तो फिर से लड़की नहीं आई। उसे रोना आ गया। पर एक व्यक्ति उसके सामने खड़ा था। उसके हाथ में एक नोकीला भाला था। उसने भाले के बदले शंख माँगा।

वह व्यक्ति बोला – इस भाला को तुम जो कहोगे, वहीं करेगा।

वह व्यक्ति भाला देकर शंख ले जाने लगा, तो छोटे भाई ने रस्सी, हथोड़ा और भाले को आदेश दिया। रस्सी ने उस व्यक्ति को बाँध दिया। भाला ने उसके शरीर को बेध दिया और हथोड़ा ने प्रहार कर उसे मार दिया।

अब छोटे भाई के पास शंख तथा चमत्कारी हथोड़ा, रस्सी और भाला था, फिर भी वह दुखी था, उदास था। उसके भाई पत्थर के खंभे बन गये थे। जिस पवित्र आत्मा छोटी लड़की को वह प्रेम करने लगा था, वह भी शंख बजाने से नहीं आती है। वह चुपके–चुपके रोता रहता था। एक दिन उसने निर्णय लिया कि मैं ईश्वर के घर जाऊँगा। अपने दुख की बात बताऊँगा ईश्वर को। उसने ईश्वर को याद किया और ईश्वर के घर की खोज में चल पड़ा। चलते–चलते एक ऊँचे पर्वत पर पहुँच गया। वहाँ उसने देखा एक बहुत बड़ा दरवाज़ा है। उस दरवाजे के बाहर दोनों ओर विशाल शरीरवाले दो भैंसा खड़ा है। छोटे भाई ने विचार किया।

यही ईश्वर का घर है। परन्तु ये दोनों पहरेदारों मुझे अंदर जाने नहीं देंगे। उसने बुद्धि से काम लिया। छोटे भाई ने रस्सी को आदेश दिया – दोनों पहरेदारों को मजबूती से जकड़ लो फिर हठोड़ा को आदेश दिया – दोनों पहरेदारों को इतना आघात करो कि ये दोनों परास्त हो जाये रस्सी और हथोड़ा ने आदेश का पालन किया। पहरेदार भैंस को परास्त कर छोटे भाईने ईश्वर के घर में प्रवेश किया। जैसे ही वह अंदर गया, वहाँ एक और विशाल दरवाजा दिखाई दिया। वहाँ दो बब्बर शेर खड़े थे। वे रक्षक थे।

छोटे भाई ने तुरंत आदेश दिया – रस्सी, भाला और हथोड़ा तुम लोग अभी जाकर दोनों बब्बर रक्षक शेरों को बाँधकर घायल कर दो। तीनों ने आदेश का पालन किया। छोटे भाई ने ईश्वर के घर के दूसरे दरवाजे में प्रवेश किया। पर उसके बाद और भी एक बाधा दिखाई दिया। एक छोटा–सा दरवाजा था। दरवाजे के उपर एक खतरनाक नोकीला चक्र तेजी से चक्कर लगा रहा था। जो भी छोटे दरवाजे के अंदर जाना चाहता, वह चक्र उसे अपनी ओर खींचकर निगल जाता था। छोटे भाई ने भाला को आदेश दिया – उस चक्र को चक्कर लगाने से रोको भाला उड़ा और चक्र के केद्र में जाकर अंदर तक ढँक गया। चक्र की गति रूक गयी। जैसे ही चक्र का चक्कर लगाना रूका, वह दरवाजे के अंदर प्रवेश कर गया।

वहाँ पर उसकी प्यारी पवित्र छोटी आत्मा लड़की उसके स्वागत के लिए खड़ी थी, फिर छोटे भाई ने अपनी प्यारी लड़की को ईश्वर के घर से विदाई कराकर अपने घर पहुँचा। प्यारी पवित्र छोटी आत्मा ने पानी का छिड़काव पत्थर के बने छः भाइयों के खंभे पर डाला। सभी भाई फिर से मनुष्य बन गये। छः भाइयों ने अपने छोटे भाई का विवाह प्यारी पवित्र छोटी आत्मा लड़की के साथ कर दिया।

शामबिली

एक युवक था। वह विवाह योग्य हो गया था, परन्तु एक भी लड़की उस युवक से बात तक नहीं करती थी। वह दुखित रहता था। वह सोचता क्या मैं सुंदर नहीं हूँ ? उसके दिमाग में एक बात आई। उसने एक फूलों का बागान बनाया। बागान में रंग–बैरंग के सुगंधित फूल थे। उसने देखा की रात्रि में कुछ लड़कियाँ बागान में आती है और फूल, तोड़कर ले जाती है। पर दिन के समय ग्राम के किसी भी लड़की के कान पर फूल उसने देखा नहीं। वह उस रात छुपकर बैठ गया। कई लड़कियाँ आई और फिर चली गयी। एक सुंदर लड़की भी थी। उस युवक ने उस लड़की को जाकर पकड़ लिया। उस लड़की ने कहा सुगंधित फूल के आकर्षण से मैं आकाश से आई हूँ। मैं शमबिली हूँ। मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती। हाँ, तुम्हारे साथ रह जरूर सकती हूँ। शामबिली उस युवक के घर रहने लगी। एक दिन शामबिली ने दूर एक लोंगकाई में मनुष्य का एक पैर देखा। निकट गयी, तो वह मिथुन का पैर था। उसको उस युवक के लिए पकाने लगी। तभी ग्राम के लोग आते दिखे। एक ने देखा शामबिली उस युवक की छाती पर बैठी है। उसी समय तूफान ने घर को गिरा दिया। घर को लोगों ने उठाया, तो शामबिली नभ में उड़ गयी थी। (क्रमशः)

Publish on 15th Every Month
RNI No. GUJHIN/2009/30610 GAMC-1764/2022-2024
ISSUED BY SSP VAILID UP TO 31-12-2024
PERMITTED TO POST AT AHD. PSO ON 15th EVERY MONTH

तत्त्वज्ञान

जिसका कुछ नहीं उसके बिना किसीका कुछ नहीं । पानी का स्वाद कैसा है ? भौतिक विज्ञान की परिभाषा कहती है कि पानी का अपना कोई स्वाद नहीं होता । पंचमहाभूतों की भारतीय परिभाषा के अनुसार पानी का गुम रस है जिसे लौकिक भाषा में स्वाद कहते हैं । पानी दृश्यमान अथवा व्यक्त रूप में शेष चारों महाभूतों के और तीन गुणों के साथ ही रहता है । केवल पानी के रूप में यह अव्यक्त होता है । इस अव्यक्त केवल जलतत्त्व के भी दो आयाम होते हैं । एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म । स्थूल रूप पानी है और सूक्ष्म रूप रस है । जगत में पंचमहाभूतों में स्वाद पानी के कारण ही होता है । जहाँ पानी नहीं वहाँ स्वाद नहीं । जहाँ जैसा पानी वैसा वहाँ स्वाद । अव्यक्त रूप में जैसे जलतत्त्व है वैसे ही रसतत्त्व है । दोनों ही मूलतः अव्यक्त हैं । पदार्थों में वे स्वादरूप में व्यक्त होते हैं ।

यही नियम शेष महाभूतों को भी लागू है । जहाँ पृथ्वी तत्त्व है वहाँ गंध है, जहाँ जितना और जैसा पृथ्वीतत्त्व वहाँ उतना और वैसा गंध । जहाँ जितना और जैसा वायु वैसा वहाँ स्पर्श । अर्थात् पृथ्वी के बिना गंध नहीं, जल के बिना स्वाद नहीं, तेज के बिना रूप नहीं, वायु के बिना स्पर्श नहीं और आकाश के बिना शब्द नहीं, तथापि पृथ्वी की अपनी कोई गंध नहीं, पानी का अपना कोई स्वाद नहीं, तेज का अपना कोई रूप नहीं, वायु का अपना कोई स्पर्श नहीं और आकाश का अपना कोई शब्द नहीं ।

ये सब अपने सगुण साकार रूप में ही जगत में व्यवहार करते हैं तो भी निर्गुण निराकार रूप में होते हैं जिसे उनका स्वभाव कहा जाता है । यह स्वभाव ही आत्मतत्त्व है ।

कार्यकर्ता अभ्यासवर्ग

पुनरुत्थान संस्थान के जो भी पाठक पुनरुत्थान विद्यापीठ के कार्य को जानना चाहते हैं और विद्यापीठ से जुडना चाहते हैं उन सबके लिये दि. १७ अप्रैल २०२३ को अहमदाबाद में एक कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग का आयोजन किया गया है । सबसे अनुरोध भी है कि इस अभ्यासवर्ग में सहभागी बनें । अभ्यास वर्ग की संख्या एकसौ निर्धारित की गई है अतः संपर्क शीघ्र ही करना होगा अभ्यास वर्ग की जानकारी के लिये संपर्कसूत्र है

समीर गायकर, कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग संयोजक
मो. ८४२५८४१४०८

अंक प्रतिमास दिनांक १५ को प्रेषित किया जाता है । दिनांक २५ तक न मिलने पर सूचित करें । शेष बचा होने की स्थिति में नया अंक प्रेषित किया जायेगा ।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	३०.०० रु.
पंचवार्षिक	१२५.०० रु.
पन्द्रह वार्षिक	३०० रु.
शुभेच्छक	१००० रु.
एक अंक	३.०० रु.

यह पत्रिका आपको उपयोगी और पठनीय लगती है तो सदस्यता शुल्क भेजने और भिजवाने की कृपा करें । शुल्क धनादेश अथवा चेक से अथवा खाते मे जमा करवा शकते है । खाता नंबर कार्यलय में से प्राप्त किजीये ।

संरक्षक
डा. भानुभाई कीकाणी

प्रधान सम्पादक
इन्दुमति काटदरे (०९४२८८२६७३१)

व्यवस्थापक
विपुल रावल (९९७९०९९१४२)
व्यवस्थापकीय एवं सम्पादकीय पत्रव्यवहार विपुल रावल के नामसे करें । लिफाफे पर 'पुनरुत्थान सन्देश' अवश्य लिखें ।

प्रकाशक : पुनरुत्थान ट्रस्ट
चित्रकार : अजित वाघेला
मुद्रक : साधना मुद्रणालय ट्रस्ट

प्रेषक :
पुनरुत्थान ट्रस्ट
'ज्ञानम्' ९ बी, आनन्दपार्क, बलियाकाका मार्ग,
जूना ढोर बजार, कांकरिया, अहमदाबाद-३८० ०२८
दूरभाष : ०७९-२५३२२६५५
ई मेल : indumatikatdare@gmail.com
वेबसाईट : www.punarutthan.org

पुस्तप्रेष | मुद्रित सामग्री

प्रति,

Printed and Published by **INDUMATI KATDARE** on behalf of **PUNARUTTHAN TRUST** and Printed at **Sadhana Mudranalaya Trust,** 55/14 City Mill Compound, Outside Raipur Darwaja, Ahmedabad-380 022 and published from 9/B, Anand Park, Baliyakaka Marg, Old Dhor Bajar, Kankaria, Ahmedabad-380 028
Editor : **INDUMATI KATDARE**